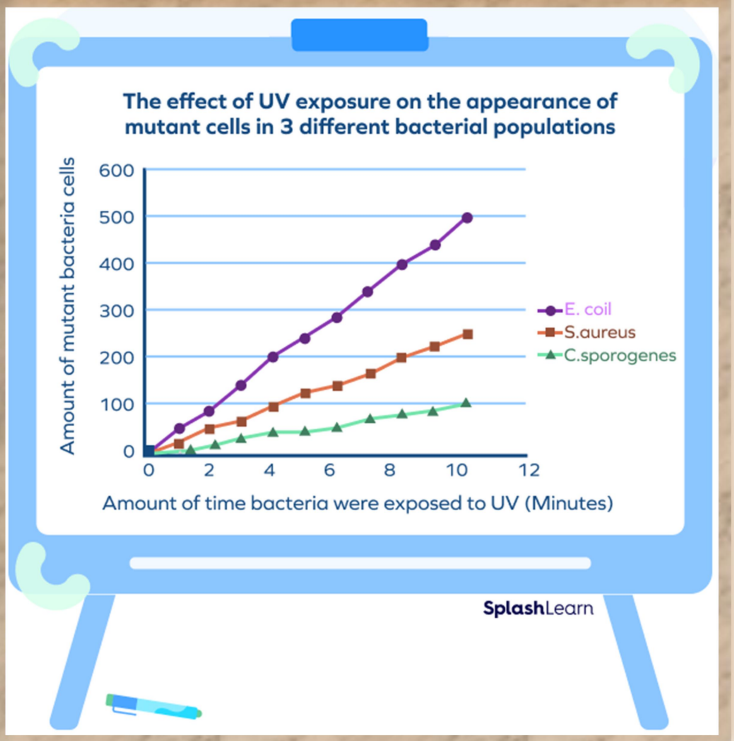

# भारत के विकास के लिए आंकड़े

सामाजिक कार्यकर्ताओं और विकास पत्रकारों के लिए आंकड़ों के महत्वपूर्ण स्रोतों की प्रवेशिका

VIKAS SAMVAD

रणनीतिक संचार केंद्र, विकास संवाद

| | |
|---|---|
| शीर्षक | **भारत के विकास के लिए आंकड़े** |
| स्वरुप | प्रवेशिका |
| संयोजन | सचिन कुमार जैन |
| परामर्श | गुरुशरण सचदेव, संदीप नाइक, विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी, राकेश मालवीय, रंजीत अभिज्ञान, पूजा सिंह, राजेश भदौरिया और रीता भाटिया |
| वर्ष | फ़रवरी, 2023 |
| प्रकाशन | रणनीतिक संचार केंद्र, विकास संवाद |
| पता | ए-5, आयकर कालोनी, जी-3, गुलमोहर, भोपाल-462039. मध्यप्रदेश. भारत |
| संस्करण | प्रथम |
| संपर्क | office@vssmp.org / 0755 4252789 |

# विषय सूची

Ω पृष्ठभूमि

Ω प्रवेशिका का उपयोग कैसे करें?

Ω विकास की अवधारणा

Ω तथ्य और आंकड़े क्या होते हैं?

Ω तथ्यों और आंकड़ों का महत्व

Ω भारत में गरीबी से संबंधित आंकड़े

1. भारत में बहुआयामी गरीबी (मल्टीडायमेंश्नल पावर्टी)

Ω भारत में शिक्षा से संबंधित आंकड़े

2. भारत में शिक्षा का अधिकार
3. शिक्षा की गुणात्मक स्थिति

Ω भारत में लोक स्वास्थ्य की स्थिति से संबंधित आंकड़े

4. भारत में लोक स्वास्थ्य/परिवार स्वास्थ्य की स्थिति
5. भारत में पेयजल (नलों के माध्यम से पेयजल आपूर्ति)
6. भारत में आकस्मिक मौतें और आत्महत्याएं
7. भारत में लोगों की मृत्यु के कारण
8. भारत में शिशु और मातृ मृत्यु
9. भारत में पुरुष और महिलायें
10. भारत में टीबी (तपेदिक)

Ω भारत में अपराध और न्यायपालिका से संबंधित आंकड़े

11. भारत में अपराध की स्थिति
12. भारत में न्यायपालिका और समाज

Ω भारत की अर्थव्यवस्था से संबंधित आंकड़े

13. भारत की आर्थिक स्थिति और अर्थव्यवस्था से संबधित आंकड़े
14. अर्थव्यवस्था से संबंधित आंकड़े

15. भारत सरकार के व्ययों और आर्थिक स्थिति से संबधित मासिक जानकारी
16. भारत के लोगों के उपभोक्ता व्यय की जानकारी
17. भारत में कारखाने

## Ω भारत में रोज़गार की स्थिति से संबंधित आंकड़े

18. भारत में रोज़गार की स्थिति पर अध्ययन
19. भारत में रोज़गार की स्थिति
20. सामाजिक-आर्थिक आंकड़ों का विश्लेषण
21. महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार गारंटी अधिनियम, 2005

## Ω समग्र / व्यापक स्तर पर आंकड़ों के स्रोत

22. सभी मंत्रालयों/विषयों की जानकारी (राज्यसभा और लोकसभा)
23. शासकीय डाटा मंच (ओपन गवर्नमेंट प्लेटफार्म)
24. भारत से सभी सर्वेक्षणों का लेखा जोखा

## Ω सतत विकास लक्ष्यों की स्थिति से संबंधित आंकड़े

25. सतत विकास लक्ष्य और उनका भारतीय सन्दर्भ
26. भारत में सतत विकास लक्ष्यों की स्थिति

## Ω कृषि और प्राकृतिक संसाधनों से संबंधित आंकड़े

27. भारत में कृषि, वन उपज और मछली पालन की स्थिति
28. भारत में पशुधन की स्थिति
29. वनों और प्राकृतिक संसाधनों का खाता
30. भारत में जंगलों की स्थिति

## Ω पंचायती राज व्यवस्था

31. ई-ग्राम स्वराज पोर्टल

## Ω विकास से संबंधित आंकड़े

32. विकास के आंकड़ों का प्रस्तुतिकरण
33. विकास से संबंधित पहलुओं के विश्लेषण

# पृष्ठभूमि

सामाजिक नागरिक संस्था के रूप में हमें अपने विषय को तथ्यों और  साक्ष्यों के जरिये जानना चाहिए। कहीं ऐसा तो नहीं है कि हम “सामान्यीकरण” के जाल में फँस रहे हैं. “सभी लोग लापरवाह है”, “सभी नीतियाँ और योजनायें खराब हैं”, “इस समुदाय के लोग तो आलसी हैं”, “कोई भी व्यक्ति सरकारी अस्पताल में इलाज नहीं करवाना चाहता है”, “कोई भी परिवार अपने बच्चों को सरकारी स्कूल में नहीं भेजना चाहता है।”;

क्या हम इस तरह के वाक्यों का इस्तेमाल करते हैं? यदि हाँ, तो इसका मतलब है कि हमने न तो अपने समुदाय का अध्ययन किया है, न ही विषय और समस्या का!

यह बहुत जरूरी है कि हम तथ्यों और प्रमाणों के साथ अपने विषय, समुदाय और स्थिति के बारे में चर्चा करें। विश्वसनीयता और गंभीरता का यही आधार है।

सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए आंकड़ों/तथ्यों/डाटा का उपयोग एक अनिवार्यता है। यह हमें स्थिति का विश्लेषण करने और अपना लक्ष्य तय करने में मदद करते हैं।

यूँ तो आंकड़ों के अलग अलग स्रोत होते हैं, लेकिन यह स्पष्ट होना जरूरी होता है कि हम अधिकृत और विश्वसनीय स्रोतों से आंकड़े/डाटा हासिल करें।

इस मार्गदर्शिका में भारत में अधिकृत संस्थाओं और शासकीय विभागों द्वारा उपलब्ध करवाए जाने वाले आंकड़ों से परिचय करवाने की कोशिश की गई है।

सामाजिक नागरिक संस्थाओं और सामाजिक-आर्थिक विकास के विषयों का विश्लेषण करने वाले व्यक्तियों के लिए यह जरूरी हो जाता है कि उनके नियोजन, प्रशिक्षण और विश्लेषण आंकड़ों और तथ्यों के आधार पर हो।

# प्रवेशिका का उपयोग कैसे करें?

1. भारत के विकास के लिए आंकड़े, इस प्रवेशिका का उद्देश्य सामाजिक-आर्थिक विकास के बारे में अपनी समझ और नज़रिए को स्पष्ट बनाना है। सामाजिक कार्यकर्ता और विकास पत्रकार के रूप में हमेशा यह प्रयास किया जाता है कि मानव समाज एक बेहतर स्थिति हासिल करे, महिलाओं, बच्चों, किसानों, मजदूरों, अनुसूचित जाति और जनजाति समूहों का जीवन अधिकार और गरिमा संपन्न बन सके. इन सभी समूहों की स्थिति क्या है, इसे आंकड़ों के जरिये की जांचा जा सकता है। अतः सबसे पहले जरूरी है कि सामाजिक कार्यकर्ता और विकास पत्रकार-लेखक आंकड़ों की आवश्यकता को पहचानें।
2. विकास एक व्यापक अवधारणा है। इसमें कई अलग-अलग विषय शामिल होते हैं। खाद्य सुरक्षा, जलवायु परिवर्तन, कृषि, प्राकृतिक संसाधन, सामाजिक भेदभाव, सामाजिक व्यवहार, बाल अधिकारों का संरक्षण, शिक्षा, युवाओं के अपेक्षाएं और क्षमताएं, स्वास्थ्य, पोषण, गरीबी, समानता सरीखे विषयों की लम्बी सूची सामने है। यह स्पष्ट कर लेना जरूरी है कि हम विकास के कौन से पहलू पर काम कर रहे हैं. विषय के उस पहलू पर अच्छे से अध्ययन करना और जिज्ञासु होने की तैयारी रखना जरूरी है।
3. विकास पत्रकार या सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में हम जब भी विचार करेंगे या अपनी भूमिका को निभाने की शुरुआत करेंगे, तब सबसे पहले उस विषय से संबंधित सभी परिभाषाओं के बारे में पूरी स्पष्टता होना जरूरी है। जलवायु परिवर्तन क्या होता है? कैसे होता है? बेरोज़गारी की दर क्या होती है? मातृ मृत्यु दर और मातृ मृत्यु अनुपात क्या होता है? शिशु मृत्यु दर, नवजात शिशु मृत्यु दर और बाल मृत्यु दर क्या होती है? इन क्या भेद या अंतर होते हैं? सकल घरेलू उत्पाद क्या होता है? हम जिन शब्दों का भी उपयोग करेंगे, उनके अर्थ स्पष्ट होना अनिवार्यता ही है।
4. इस प्रवेशिका में आंकड़ों के प्रारम्भिक स्रोत दिए हैं। इन्हें हडबडाहट में इस्तेमाल नहीं किया जा सकता है। ये समझ में ही नहीं आयेंगे। बेहतर होगा कि ज़रा खुले मन से और खुले मस्तिष्क से इन स्रोतों पर जाएँ, पन्नों को खंगालें, विषय से संबंधित जो भी परिभाषाएं और व्याखाएं दी गईं हैं, उन्हें पढ़ें और समझें। आंकड़ों का उपयोग बहुत जिम्मेदारी का काम है।

# विकास की अवधारणा

**विकास क्या है?**

विकास एक ऐसी प्रक्रिया है जो वृद्धि, प्रगति, सकारात्मक बदलाव अथवा भौतिक, आर्थिक, सामाजिक और जनसांख्यिकी तत्वों में सकारात्मक बातें जोड़ती है।

**विकास की जरूरत:**

लोगों का जीवन स्तर सुधारना

बिना प्राकृतिक संसाधनों को क्षति पहुंचाए रोजगार के अवसर तैयार करना और उनमें इजाफा करना

**विकास की परिभाषाएं:**

'विकास बदलाव की एक ऐसी प्रक्रिया है जो लोगों को इस योग्य बनाती है कि वे अपने भाग्य विधाता स्वयं बन सके तथा अपने अर्न्तनिहित समस्त सम्भावनाओं को पहचान सकें।"

- जे बी क्लार्क (अमेरिकी अर्थशास्त्री)

-

'लोग कितनी क्षमताओं से अपनी स्वतंत्रताओं का इस्तेमाल कर पा रहे हैं। इससे ही विकास तय होता है। केवल लोगों की आय में बदलाव से विकास को नहीं आंका जाना चाहिए। इस आकलन में उनके चयन, क्षमताएं और स्वतंत्रताएं शामिल हैं।'

- अमर्त्य सेन (अर्थशास्त्री)

'विकास पूरी तरह आर्थिक अवधारणा नहीं है बल्कि वह एक बहुआयामी प्रक्रिया है जिसमें समूची आर्थिक और सामाजिक व्यवस्था का पुनर्गठन शामिल होता है।'

- टोडारो और स्मिथ (माइकल टोडारो और स्टीवन स्मिथ) अमेरिकी अर्थशास्त्री

**अमर्त्य सेन का कैपेबिलिटी का सिद्धांत**

यह सिद्धांत कहता है कि विकास वह उपाय है जिसके माध्यम से लोगों को इस योग्य बनाया जा सकता है कि वे अपनी क्षमताओं का अधिकतम इस्तेमाल कर सकें। ऐसा तभी होगा जब उन्हें आर्थिक, सामाजिक और परिवार के स्तर पर पूरी स्वतंत्रता हासिल होगी।

**विकास क्या है**?

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि विकास किसी व्यक्ति या नागरिक से जुड़ा नहीं होता बल्कि यह सामाजिक और आर्थिक प्रक्रिया है।

किसी व्यक्ति आय बढ़ने से या सामूहिक रूप से पूरे समाज की आय का स्तर सुधरने से उनके रहन-सहन जीवन स्तर में जो सकारात्मक बदलाव आता है उसे विकास कहा जाता है।

मोटे तौर पर यह बदलाव आसपास के बुनियादी ढांचे में तथा उनकी सामाजिक हैसियत में देखा और महसूस किया जा सकता है।

**विकास एक किस्म से अपनी स्थिति को और बेहतर करने, तय लक्ष्यों को हासिल करने, अपनी आकांक्षाओं को पूरा करने की प्रक्रिया है; इस प्रक्रिया में अहम् मूल्य यह है कि इससे प्रकृति और भविष्य की पीढ़ियों के सामने चुनौती खड़ी न हो। विकास का उद्देश्य समाज की विसंगतियों को दूर करना भी होता है। विकास की प्रक्रिया इस अहसास पर चलती है कि सृष्टि में मौजूद संसाधनों पर केवल इंसान का ही हक़ नहीं है। उसे अपनी जरूरतों को केवल पूरा करने के लिए इन संसाधनों का उपयोग करने का अधिकार है, शोषण करने का नहीं।**

**विकास के लक्ष्य क्या हैं**?

- लोगों के जीवन स्तर में निरंतर सुधार करना।
- लोगों को अपनी क्षमताओं का पूरा इस्तेमाल करने में सक्षम बनाना।
- उन्हें ऐसा माहौल देना जिसमें वे अपनी सामाजिक-आर्थिक हैसियत सुधार सकें।

**क्या विकास सभी के लिए समान है**?

- नहीं, समाज के अलग-अलग वर्ग के लोगों के लिए विकास के अलग-अलग अर्थ हो सकते हैं:
- नौकरीपेशा व्यक्ति के लिए बेहतर वेतन वाली नौकरी
- मजदूर के लिए बेहतर मजदूरी और बेहतर कार्य परिस्थितियां
- किसान के लिए अच्छी उपज
- बच्चों के लिए अच्छी शिक्षा और स्वास्थ्य आदि विकास के लक्ष्य हो सकते हैं।

**विकास कितनी तरह का हो सकता है**?

- सामाजिक विकास।
- सामाजिक संस्थाओं में परिवर्तन के माध्यम से समाज अपनी आकांक्षाओं में सुधार लाता है।
- लोगों द्वारा उन्नत और प्रगतिशील कार्य व्यवहार को अपनाना।
- उन्नत तकनीकों का इस्तेमाल करना।
- सामाजिक संस्थाओं में प्रगतिशील सुधार करना आदि इसके उदाहरण हैं।

**आर्थिक विकास**

आर्थिक विकास से तात्पर्य व्यक्ति और समाज के स्तर पर आर्थिक सुधार से है। इसका अर्थ है लोगों की आय, उनके जीवन स्तर में सुधार। इसका आकलन प्राय: प्रति व्यक्ति आय और सकल घरेलू उत्पाद तथा राष्ट्रीय आय में वृद्धि के आधार पर किया जाता है।

- बौद्धिक विकास
- आध्यात्मिक विकास
- स्थायित्व वाला विकास

विकास एक बहुआयामी अवधारणा है जिसमें चीजें एक स्थिति से सकारात्मक रूप से आगे बढ़कर दूसरी स्थिति की ओर बढ़ती हैं।

# तथ्य और आंकड़े क्या होते हैं?

- तथ्य और आंकड़े कोई भी ऐसी संख्या, वाक्य, कथन होता है, जो किसी भी वास्तविकता को स्थापित करता है। इससे स्थिति का ऐसा सही-सही अनुमान लगता है। जो वास्तविकता के अनुरूप हो और जिसे किसी प्रमाण से माध्यम से साबित किया जा सके।
- तथ्य और आंकड़े कोई भी संख्या हो सकते हैं, वाक्य हो सकते हैं, आंकड़े हो सकते हैं।
- तथ्य और आंकड़े वास्तविकता से, परीक्षण से और विश्लेषण से आधार तैयार किये जाते हैं।
- तथ्य और आंकड़ों का कोई न कोई स्रोत जरूर होता है। यह व्यक्ति हो सकता है या कोई अध्ययन हो सकता है या अनुभव हो सकता है।
- तथ्यों और आंकड़ों से ही वास्तव में गहरी से गहरी जिज्ञासाओं का समाधान होता है।
- तथ्यों और आंकड़ों से ही यह स्पष्ट हो सकता है कि हमनें कोई पहल क्यों की? समस्या क्या थी? समस्या का दायरा क्या था? संस्थाओं, समाज या सरकार की पहल से क्या बदलाव आया?
- तथ्यों और आंकड़ों से विश्वसनीयता भी स्थापित होती है।

# तथ्यों और आंकड़ों का महत्व

- आंकड़ों से हमें तथ्यों की व्यापकता के बारे में पता चलता है कि कोई भी विषय या समस्या मामूली है या बड़ी है!
- अगर नियमित रूप से आंकड़े और तथ्य जुटाए जाते रहें, तो अलग-अलग सालों से आंकड़ों से स्थिति में बदलाव का अध्ययन किया जा सकता है।
- इससे सरकार या संस्थाएं किसी भी विषय के बारे में स्थिति को स्पष्ट कर पाते हैं। सरकार अपने अध्ययन से यह स्पष्ट करती है कि कोई भी नीति या कार्यक्रम बनाने और क्रियान्वित करने की जरूरत क्यों पड़ी?
- इससे हमें संस्थाओं के रूप में भी स्वयं को और अन्य समूहों को यह पता चल पाता है कि हम कोई भी कार्यक्रम क्यों चला रहे हैं?
- जिस समस्या को हल करने की हम कोशिश कर रहे हैं, उसकी तथ्यात्मक स्थिति क्या है? इससे समस्या की गंभीरता का अहसास होगा।
- इससे तय हो पाता है कि क्या बदलाव लाना हैं? तथ्यात्मक पहल होने से बदलाव को स्पष्ट रूप से मापा जा सकता है।
- जब तथ्यों/आंकड़ों और मैदानी अध्ययन के अनुभवों के आधार पर अपने काम की योजना बनाई जाती है, तो तब प्रभावी रणनीति और गतिविधियों का चयन हो पाता है।
- इससे हमें विभिन्न विषयों, विभागों और समस्याओं के आपसी संबंधों के बारे में भी पता चलता है। मसलन कुपोषण का सम्बन्ध बाल विवाह से, पीने के साथ पानी की समस्या से, रोज़गार की कमी से, लैंगिक भेदभाव से आदि।
- हम समय समय पर यह आंकलन कर पाते हैं, समीक्षा कर पाते हैं कि हमने कहाँ से शुरुआत की थी और एक साल बाद या दो साल बाद या पांच साल बाद हम किस स्थिति में पहुंचे हैं?

# भारत में गरीबी से संबंधित आंकड़े

## 1. भारत में बहुआयामी गरीबी (मल्टीडायमेंश्नल पावर्टी)

वर्तमान समय में गरीबी को बहुआयामी गरीबी (मल्टीडायमेंश्नल पावर्टी) के रूप में मापा जाता है। इस परिभाषा में केवल आर्थिक व्यय (यानी लोग कितना खर्च करते हैं?) को ही गरीबी का पैमाना नहीं माना जाता है। अब इसमें स्वास्थ्य, शिक्षा और जीवन स्तर को भी गरीबी के पैमाने के रूप में अपनाया गया है। गरीबी मिटाने के लक्ष्य को हासिल करने के लिए की जा रही कोशिशों में बहुत जरूरी है कि हम तथ्यात्माम्क आधारों पर और प्रमाणों से साथ कार्यक्रम बनाने, नीति निर्माण करने, कार्यक्रमों के प्रभावों की समीक्षा करने की प्रक्रिया संचालित की जाए। भारत में राष्ट्रीय, राज्य और जिला स्तर पर बहुआयामी गरीबी की स्थिति क्या है, इसके तथ्य/आंकड़े नीति आयोग द्वारा किये गए अध्ययन में उपलब्ध हैं। इस रिपोर्ट में राज्यों में पोषण, स्वच्छता, पेयजल, विद्युत् आपूर्ति, बाल मृत्यु, स्कूली शिक्षा सरीखे मानकों को स्पष्ट करने वाले आंकड़े दिए गए हैं।

बहुआयामी गरीबी के राष्ट्रीय, राज्य और जिला स्तर के आंकड़ों के स्रोत - https://www.niti.gov.in/sites/default/files/2021-11/National_MPI_India-11242021.pdf

मूल स्रोत - https://www.niti.gov.in/overview-sustainable-development-goals

बहु आयामी गरीबी पर आंकड़ों के अतिरिक्त स्रोत
https://hdr.undp.org/content/2022-global-multidimensional-poverty-index-mpi#/indicies/MPI
https://hdr.undp.org/content/2021-global-multidimensional-poverty-index-mpi

आक्सफोर्ड पावर्टी एंड ह्युमन डेवलपमेंट इनिशिएटिव: https://ophi.org.uk/
https://www.statista.com/statistics/1272872/india-population-in-multidimensional-poverty/

# भारत में शिक्षा से संबंधित आंकड़े

## 2. भारत में शिक्षा का अधिकार

भारत में शिक्षा का अधिकार एक मूलभूत अधिकार है। वास्तव में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के अधिकार के बहुत सारे आयाम हैं; मसलन, स्कूलों का उपलब्ध होना, स्कूलों में नामांकन होना, शिक्षकों की उपलब्धता, पेयजल और शौचालय की उपलब्धता आदि। भारत के विभिन्न राज्यों और जिलों में शिक्षा के अधिकार की स्थिति को जांचने का आधारभूत माध्यम है आंकड़े और तथ्य।

भारत में शिक्षा के अधिकार से संबंधित राष्ट्र, और जिला स्तर के आंकड़ों के स्रोत -
मूल स्रोत - https://dashboard.udiseplus.gov.in/#/home

शिक्षा के अधिकार से संबंधित राज्यों के आंकड़ों के स्रोत -
https://dashboard.udiseplus.gov.in/#/reportDashboard/state

स्कूलों में नामांकन, शाला त्यागे जाने की स्थिति से संबंधित आंकड़ों के स्रोत -
https://dashboard.udiseplus.gov.in/#/reportDashboard/sReport

## 3. शिक्षा की गुणात्मक स्थिति

भारत में शिक्षा की स्थिति क्या है? इस विषय पर एक वार्षिक अध्ययन किया जाता है और उस अध्ययन की रिपोर्ट भारत के सभी राज्यों में शिक्षा की गुणवत्ता से संबंधित पहलुओं का विश्लेषण करती है। इस अध्ययन में यह जांचा जाता है कि वास्तव में बच्चे किस स्तर तक "पढ़" सकते हैं? बेहतर शिक्षा के लिए जरूरी व्यवस्थाओं और ढांचागत सुविधाओं की स्थिति का अध्ययन भी किया जाता है। यह रिपोर्ट "असर"(असर सेंटर द्वारा जारी रिपोर्ट) कहलाती है।

भारत में स्कूली शिक्षा की स्थिति से संबंधित जमीनी अध्ययन के आंकड़ों के स्रोत -
http://www.asercentre.org/Keywords/p/394.html

# भारत में लोक स्वास्थ्य की स्थिति से संबंधित आंकड़े

## 4. भारत में लोक स्वास्थ्य/परिवार स्वास्थ्य की स्थिति

भारत में बच्चों और महिलाओं में पोषण की स्थिति जानने के लिए भारत सरकार द्वारा वर्ष 1991-92 से राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण(नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे) कराया जा रहा है। अब तक इसके पांच चक्र हो चुके हैं। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (नेशनल फेमिली हेल्थ सर्वे) अब महिलाओं की सामाजिक स्थिति, घरेलू हिंसा, शिशुओं के स्तनपान की स्थिति, बच्चों में ऊपरी आहार के व्यवहार की स्थिति, रक्ताल्पता, बच्चों में अल्पपोषण/कुपोषण की स्थिति से संबंधित आंकड़े उपलब्ध करवाता है। चूंकि यह सर्वेक्षण अब एक निश्चित समय के अंतराल पर होता है, इसलिए इन आंकड़ों का उपयोग लोक स्वास्थ्य और परिवार स्वास्थ्य की स्थिति में आ रहे बदलावों को जांचने के लिए भी किया जा सकता है।

भारत में बच्चों और महिलाओं की पोषण की स्थिति से संबंधित आंकड़ों के स्रोत - http://rchiips.org/nfhs/

भारत के विभिन्न राज्यों में बच्चों और महिलाओं के पोषण और स्वास्थ्य सम्बन्धी व्यवहार की स्थिति के आंकड़ों के स्रोत - http://rchiips.org/nfhs/NFHS-5_State_Report.shtml

भारत के राज्यों के सभी जिलों में बच्चों और महिलाओं के पोषण और स्वास्थ्य संबंधित व्यवहारों की स्थिति के आंकड़ों के स्रोत - http://rchiips.org/nfhs/districtfactsheet_NFHS-5.shtml

## 5. भारत में पेयजल (नलों के माध्यम से पेयजल आपूर्ति)

स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता और पेयजल तक पहुँच भारत के विकास में एक बड़ी चुनौती रही है। एक तरफ इसका सीधा जुडाव स्वास्थ्य संबधी मानकों के साथ है, तो दूसरा सिरा महिलाओं पर दोहरे दबाव की तरफ खुलता है। कई बच्चे इसलिए स्कूल से बाहर होते हुए क्योंकि उन्हें अपने परिवार की पेयजल/घरेलू उपयोग सम्बन्धी पानी की जरूरत को पूरा करने के संघर्ष में शामिल होना पड़ता रहा है। इस सन्दर्भ में तय किया गया कि केवल शहरी क्षेत्रों में ही नहीं, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में भी नल के माध्यम से पानी की आपूर्ति की व्यवस्था बनाई जाए। जल जीवन मिशन के मंच पर राष्ट्र, राज्य और जिला स्तरीय आंकड़े प्रस्तुत किये गए हैं।

भारत में नल के माध्यम से पानी की आपूर्ति की स्थिति से संबंधित आंकड़ों के स्रोत - https://ejalshakti.gov.in/jjmreport/JJMState.aspx

## 6. भारत में आकस्मिक मौतें और आत्महत्याएं

भारत में आकस्मिक मौतें एवं आत्महत्याएँ सम्बन्धी विषय भी विकास का एक महत्वपूर्ण मानक है। राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो (नेशनल क्राइम रिकार्ड्स ब्यूरो- एनसीआरबी) हर वर्ष इस विषय पर आंकड़े जारी करने वाली संस्था है। राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो वर्ष 1967 से इस विषय पर रिपोर्ट जारी कर रहा है।

भारत में आकस्मिक मौतों एवं आत्महत्याओं से संबंधित आंकड़ों के स्रोत -
https://ncrb.gov.in/hi/node/3722

## 7. भारत में लोगों की मृत्यु के कारण

भारत के महारजिस्ट्रार और जनगणना आयुक्त के कार्यालय (गृह मंत्रालय, भारत सरकार) के द्वारा सेम्पल रजिस्ट्रेशन सिस्टम (एसआरएस) का प्रबंधन किया जाता है। इस व्यवस्था के अंतर्गत भारत में लोगों की "मृत्यु के कारणों" का अध्ययन किया जाता है।

तीसरी पंचवर्षीय योजना में भारत में मुख्य सूचकों से संबंधित जानकारियों/आंकड़ों को इकट्ठा करने की योजना भारत के महापंजीयक ने शुरू की। इसी में मृत्यु के कारणों से सम्बन्धित जानकारी जुटाई जाना थी।

चूंकि स्वास्थ्य व्यवस्थाएं मज़बूत नहीं थीं, इसलिए तब इस विषय पर ध्यान नहीं दिया जा सका। बाद में इसे जन्म और मृत्यु का पंजीयन अधिनियम, 1969 के जरिये कानूनी स्वरुप दिया गया। संस्थागत और गैर-संस्थागत मृत्यु से संबंधित जानकारी इकट्ठा करने के अलग-अलग प्रारूप हैं। हो विश्व स्वास्थ्य संगठन के मानकों पर आधारित हैं।

सेम्पल रजिस्ट्रेशन सिस्टम के तहत इस विषय पर "काज़ेज़ आफ डेथ इन इंडिया" शीर्षक से रिपोर्ट जारी की जारी है। इसमें अलग-अलग उम्र के व्यक्तियों/आयु वर्गों में होने वाली मृत्यु के मामलों के कारणों का विश्लेषण किया जाता है।

यह रिपोर्ट महत्वपूर्ण आंकड़ों का स्रोत है -
https://censusindia.gov.in/census.website/data/SRSCOD

## 8. भारत में शिशु और मातृ मृत्यु

भारत में जन्म दर, मृत्यु दर और शिशु मृत्यु दर से संबंधित आंकड़े हर वर्ष जारी किये जाते हैं। इससे भारत में बच्चों के जीवन के समक्ष उपस्थित चुनौतियों की गंभीरता का अनुमान लगता है। सेम्पल रजिस्ट्रेशन सिस्टम (भारत के महारजिस्ट्रार और जनगणना आयुक्त के कार्यालय, गृह मंत्रालय, भारत सरकार) के द्वारा जारी की जाने वाली इस रिपोर्ट में लैंगिक वर्गीकरण, शहरी-ग्रामीण क्षेत्रों और उम्र वार मृत्यु दर की स्थिति का आंकलन किया जाता है। इसके साथ ही इसी विभाग के

द्वारा मातृ मृत्यु दर और अनुपात (मेटरनल मार्टेलिटी रेट और रेश्यो) से संबंधित आंकड़े भी जारी किये जाते हैं।

एसआरएस द्वारा जारी की जाने वाली इस रिपोर्ट में बुलेटिन और सांख्यिकी रिपोर्ट (स्टेटिस्टिकल रिपोर्ट) के रूप में तीन भाग होते हैं।

बुलेटिन - https://censusindia.gov.in/census.website/data/SRSB

सांख्यिकी रिपोर्ट (स्टेटिस्टिकल रिपोर्ट) - https://censusindia.gov.in/census.website/data/SRSSTAT

मातृ मृत्यु की स्थिति - https://censusindia.gov.in/census.website/data/SRSMMB

## 9. भारत में पुरुष और महिलायें

कई मानकों पर, या कहें कि ज्यादातर मानकों पर भारत में लैंगिक आधार पर भेद और भेदभाव मौजूद है। भोजन, शिक्षा, स्वास्थ्य, सामान्य व्यवहार तक महिलाओं और पुरुषों में असमानता दिखाई देती है। भारत सरकार का सांख्यिकी और कार्यक्रम क्रियान्वयन मंत्रालय द्वारा भारत में महिलायें और पुरुष (मेन एंड विमेन इन इंडिया) शीर्षक से लैंगिक समानता और असमानता के सन्दर्भ में एक रिपोर्ट प्रकाशित की जाती है। इसमें राज्यवार आंकड़े उपलब्ध होते हैं।

भारत में पुरुष और महिलायें - https://mospi.gov.in/documents/213904/959690//latestmen1626945980421.pdf/758be5d1-76df-ee23-54f8-4746ce2aac9e

## 10. भारत में टीबी (तपेदिक)

तपेदिक या ट्यूबरक्लोसिस (टीबी) एक संक्रामक रोग गई। यह मुख्य रूपसे फेंफडों या दुसरे ऊतकों को प्रभावित करता है। लेकिन यह रीढ़, मस्तिष्क या गुर्दे सरीखे अंगों को भी प्रभावित करता है। इसका गहरा सम्बन्ध पोषण की सुरक्षा के साथ होता है। गरीबी से प्रभावित लोग इससे बहुत प्रभावित होते हैं। धूम्रपान करने वाले लोग भी इससे ज्यादा ग्रसित होते हैं। टीबी भारत में अन्य सभी संक्रामक बीमारियों से सबसे अधिक मृत्यु का कारण है। भारत की आबादी विश्व की आबादी से 20 प्रतिशत से भी कम है लेकिन विश्व के कुल टीबी मरीजों का 25 प्रतिशत से ज्यादा भारत में हैं। इस समस्या से निपटने के लिए भारत सरकार के लोक स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा "टीबी मुक्त भारत अभियान" चलाया जा रहा है। इस विषय पर हर वर्ष एक विस्तृत रिपोर्ट जारी की जाती है। जिसका शीर्षक होता है - इंडिया टीबी रिपोर्ट (वर्ष)। इस रिपोर्ट में भारत में टीबी की स्थिति, अलग-

अलग राज्यों में टीबी के लक्षणों वाले व्यक्तिओं, टीबी की जांच से गुजरने वाले व्यक्तियों और टीबी से वास्तव में प्रभावित लोगों की राज्यवार संख्यात्मक जानकारी दी जाती है।

भारत में तपेदिक (ट्यूबरक्लोसिस-टीबी) की स्थिति पर विभिन्न वर्षों में जारी रिपोर्ट - https://tbcindia.gov.in/index1.php?lang=1&level=1&sublinkid=4160&lid=2807

भारत में वर्ष 2022 में तपेदिक (ट्यूबरक्लोसिस-टीबी) की स्थिति की रिपोर्ट - https://tbcindia.gov.in/WriteReadData/IndiaTBReport2022/TBAnnaulReport2022.pdf

# भारत में अपराध और न्यायपालिका से संबंधित आंकड़े

## 11. भारत में अपराध की स्थिति

विकास का एक महत्वपूर्ण पैमाना है नागरिकों, बच्चों, महिलाओं, अनुसूहित जाति-जनजाति से संबंधित लोगों, वृद्धों की सुरक्षा की स्थिति। भारत में अलग अलग समूहों के साथ होने वाले अपराधों के आंकड़े राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो (नेशनल क्राइम रिकार्ड्स ब्यूरो- एनसीआरबी) दर्ज करता है और सार्वजनिक करता है। यह संस्था हर साल की स्थिति पर विस्तृत रिपोर्ट जारी करती है। इस रिपोर्ट में अलग-अलग तरह के अपराधों का वर्गीकरण किया जाता है। इसमें आर्थिक अपराध, गुम होने वाले लोगों की संख्या के आंकड़े उपलब्ध होते हैं। इसके साथ ही राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो यह जानकारी भी उपलब्ध करवाता है कि दर्ज किये हुए मामलों में क्या प्रगति हुई, जांच की स्थिति और न्यायालय के निर्णय/न्यायालयीन प्रक्रिया के स्थिति से संबंधित आंकड़े भी इसमें शामिल होते हैं।

भारत में होने वाले/दर्ज किये गए अपराधों की स्थिति के आंकड़ों के स्रोत - https://ncrb.gov.in/hi/node/3721

भारत में दर्ज होने वाले अपराधों की जिलावार स्थिति के आंकड़ों के स्रोत - https://ncrb.gov.in/sites/default/files/CII-2021/CII-2021-District.html

भारत में दर्ज अपराधों की रिपोर्ट (वर्ष 1953 से शुरू होकर) - https://ncrb.gov.in/hi/crime-in-india

## 12. भारत में न्यायपालिका और समाज

भारत की व्यवस्था में न्यायपालिका एक बेहद महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। आम लोगों का किसी न किसी रूप में न्यायपालिका से साबका पड़ता है। अगर हम "न्याय" के पहलू पर नज़र रखना चाहते हैं, तो हमारे लिए नेशनल ज्युडिशियल डाटा ग्रिड (एनजेडीजी) जानकारियों का एक महत्वपूर्ण स्रोत हो सकता है।

भारत के उच्च न्यायालय में कितने प्रकरण लंबित हैं? कितने वर्षों से लंबित हैं? किस स्वरुप के प्रकरण लंबित हैं? इसी तरह जिला और तालुका न्यायालयों ने कितने प्रकरण लंबित हैं? कितने वर्षों से लंबित हैं? किस स्वरुप के प्रकरण लंबित हैं? यह जानकारियाँ एनजेडीजी पर उपलब्ध हैं।

उच्च न्यायालय से संबंधित आंकड़ों के स्रोत - https://njdg.ecourts.gov.in/hcnjdgnew/

जिला और तालुका न्यायालयों से संबधित आंकड़ों के स्रोत - https://njdg.ecourts.gov.in/njdgnew/index.php

उच्चतम न्यायालय से संबधित आंकड़ों के स्रोत - https://main.sci.gov.in/statistics

# भारत की अर्थव्यवस्था से संबंधित आंकड़े

## 13. भारत की आर्थिक स्थिति और अर्थव्यवस्था से संबधित आंकड़े

वृहद् रूप में भारत की आर्थिक स्थिति कैसी है? अर्थव्यवस्था के अलग-अलग क्षेत्रों में किस तरह की प्रगति हो रही है या बदलाव आ रहा है? भारत में प्रतिव्यक्ति आय, अधोसंरचना की स्थिति और सकल घरेलू उत्पाद से संबंधित आयामों की वर्तमान स्थिति क्या है? यह जानकारियां भारत सरकार द्वारा हर वर्ष प्रस्तुत किये जाने वाले आर्थिक सर्वेक्षण (आर्थिक समीक्षा) के दस्तावेज से प्राप्त होती हैं। आर्थिक समीक्षा का एक भाग होता है सांख्यिकी परिशिष्ट का। इसमें अर्थव्यवस्था से संबंधित पहलुओं पर हर साल नई जानकारी हासिल शामिल की जाती है।

भारत की आर्थिक स्थिति और अर्थव्यवस्था से सम्बब्धित विभिन्न आयामों के आंकड़ों के स्रोत - https://www.indiabudget.gov.in/economicsurvey/

## 14. अर्थव्यवस्था से संबंधित आंकड़े

भारत में बैंक कितने हैं? उनमें कितना जमा है? किन क्षेत्रों के लिए कुल कितना क़र्ज़ दिया गया है? लोक ऋण की क्या स्थिति है? राष्ट्रीय आय की क्या स्थिति है? विभिन्न मूल्य सूचकांकों की क्या स्थिति है? भुगतान संतुलन और विदेशी मुद्रा कोष की क्या स्थिति है? भारत के सामाजिक-आर्थिक सूचकों की क्या स्थिति है? जब हम भारत के आर्थिक विकास के बारे में चर्चा करते हैं, तब इन प्रश्नों के उत्तर/जिज्ञासाओं के समाधान की आवश्यकता महसूस होती है। भारत का केन्द्रीय बैंक भारतीय रिज़र्व बैंक है। यह बैंक ही भारत की अर्थव्यवस्था से संबंधित प्रमुख आंकड़े संधारित करता है और लोगों को उपलब्ध करवाता है।

भारत की अर्थव्यवस्था से संबंधित विभिन्न आयामों पर नवीनतम और अधिकृत आंकड़ों के स्रोत - https://dbie.rbi.org.in/DBIE/dbie.rbi?site=home

## 15. भारत सरकार के व्ययों और आर्थिक स्थिति से संबधित मासिक जानकारी

महालेखा नियंत्रक (कंट्रोलर जनरल आफ अकाउंट्स भारत सरकार के प्रधान लेखा सलाहकार होते हैं।

महालेखा नियंत्रक हर महीने वित्त मंत्रालय के व्यय, राजस्व, उधार और घाटे का समीक्षात्मक विश्लेषण तैयार करते हैं। यह इकाई महालेखा नियंत्रक संसद में प्रस्तुत किए जाने के लिए वार्षिक विनियोग लेखे और संघ वित्त लेखे को भी तैयार करता है। अगर हम देश के विकास की प्रक्रिया को गहराई से जानना और विश्लेषित

करना कहते हैं तो महालेखा नियंत्रक द्वारा प्रस्तुत किये जाने वाले प्रतिवेदन और आंकड़े बहुत उपयोगी नजरिया प्रदान करते हैं।

भारत सरकार द्वारा किये जाने वाले व्ययों और आर्थिक स्थिति से संबधित पहलुओं के आंकड़ों के स्रोत - https://cga.nic.in/index.aspx#account-section

## 16. भारत के लोगों के उपभोक्ता व्यय की जानकारी

नेशनल सेम्पल सर्वे भारत के समाज को प्रभावित करने वाले विभिन्न विषयों पर आधिकारिक और तथ्यात्मक जानकारी उपलब्ध करवाते हैं। यह सर्वेक्षण सांख्यिकी और क्रियान्वयन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा किये जाते हैं।

भारत के लोगों के उपभोक्ता व्यय, जीवन शैली, भोजन पर व्यय, ऊर्जा पर व्यय सरीखे विषयों पर वर्ष 1954 से जानकारी इस स्रोत पर उपलब्ध है।
https://mospi.gov.in/web/mospi/reports-publications

## 17. भारत में कारखाने

भारत में कितने तरह के और कितने कारखाने हैं? उनमें कितने लोग काम करते हैं? उनसे कितना उत्पादन होता है? उनकी आर्थिक स्थिति क्या है? कुल मिलाकर भारत में और भारत के विभिन्न राज्यों में कारखानों की स्थिति और परिदृश्य क्या है, यह जानकारी भी संधारित की जाती है।

भारत में कारखानों की स्थिति से संबंधित आंकड़ों के स्रोत -
http://microdata.gov.in/nada43/index.php/catalog/ASI

# भारत में रोज़गार की स्थिति से संबंधित आंकड़े

## 18. भारत में रोज़गार की स्थिति पर अध्ययन

अज़ीम प्रेमजी विश्वविध्यालय भारत में रोज़गार की स्थिति पर सतत निगाह रखता है। रोज़गार के अध्ययन की प्रक्रिया में विश्वविध्यालय रोज़गार में महिलाओं की स्थिति, पलायन, कृषि में रोज़गार, अनुसूचित-जनजाति जाति समुदाय के रोज़गार की स्थिति, श्रम की उत्पादकता, स्वरोजगार की स्थिति, नियमित रोज़गार और अनियमित रोज़गार की स्थिति सरीखे बिन्दुओं पर स्थिति और आंकड़ों का प्रभावी विश्लेषण करता है।

भारत में रोज़गार की स्थिति पर जमीनी अध्ययन के स्रोत - https://bit.ly/3FzKxAp (https://app.powerbi.com)

## 19. भारत में रोज़गार की स्थिति

वास्तव में रोज़गार और आजीविका देश के आर्थिक और सामाजिक विकास का एक बेहद महत्वपूर्ण आयाम और सूचक है। समाज के लिए यह एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है और विकास की नीति बनाने वाली इकाइयों के लिए एक जिम्मेदारी और जवाबदेहिता का क्षेत्र भी है। वास्तव में आर्थिक विकास के सूचकों को रोज़गार और आजीविका के परिप्रेक्ष्य में देखा जाना जरूरी है। भारत में नियमित रूप से (हर तिमाही में)रोज़गार की स्थिति से संबंधित आंकड़े जारी किये जाते हैं इसे आवधिक श्रमबल सर्वेक्षण (पीरियोडिक लेबर फ़ोर्स सर्वे-पीएलएफएस) कहा जाता है।

भारत में श्रम बल (रोज़गार) की स्थिति के आंकड़ों के स्रोत - https://mospi.gov.in/web/mospi/reports-publications और https://mospi.gov.in/web/plfs

## 20. सामाजिक-आर्थिक आंकड़ों का विश्लेषण

आंकड़े अमूर्त या निष्प्राण नहीं होते हैं। वास्तव में वे विचारों और सोच को स्पष्टता प्रदान करने में बहुत मदद करते हैं। अशोका विश्वविध्यालय के सेंटर फार इकोनोमिक डाटा एंड एनालिसिस ने आंकड़ों को सोच और समझ के साथ परिभाषित करने की पहल की है।

इसके द्वारा विभिन्न सामाजिक और आर्थिक मानकों पर आंकड़े संग्रहीत और प्रस्तुत किये जा रहे हैं। https://ceda.ashoka.edu.in/data-narratives/ और https://ceda.ashoka.edu.in/data-portal-landing-page/

## 21. महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार गारंटी अधिनियम,2005

महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार गारंटी अधिनियम, 2005(योजना) यानी मनरेगा भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में सुनिश्चित रोज़गार उपलब्ध करने के लिए कानूनी व्यवस्था की स्थापना करता है। भारत के सभी ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों की मांग पर वर्ष में कम से कम 100 दिन का रोज़गार दिए जाने का प्रावधान इस क़ानून में किया गया है। इसका एक बहुत अहम् उद्देश्य ग्रामीण विकास के लिए योजनाबद्ध सहायता उपलब्ध करवाना भी है। मनरेगा के तहत गांवों में पहुँच मार्ग, वृक्षारोपण,जल संरचनाओं, स्वच्छता और पोषण वाटिका का निर्माण सरीखे काम किये जाते हैं। इसकी निगरानी के लिए ग्रामीण विकास मंत्रालय (भारत सरकार) द्वारा वेब पोर्टल संचालित किया जाता है। इस पोर्टल पर राष्ट्रीय स्तर से लेकर ग्राम पंचायत स्तर तक की जानकारी और आंकड़े नियमित रूप से उपलब्ध कराये जाते हैं। पंचायत में मनरेगा के तहत कौन से काम चल रहे हैं? कितने लोगों को रोज़गार मिला या मिल रहा है? कौन से काम पूरे हो चुके हैं? कितने मजदूरों को उनकी मजदूरी का भुगतान हो चुका है? पंचायत में मनरेगा के तहत कुल कितनी राशि खर्च हुई है? कितने परिवारों को कितने दिन का रोज़गार मिला? जल संरचना के कितने काम हुए? वृक्षारोपण के कितने काम हुए? ऐसी बहुत विस्तृत जानकारियाँ मनरेगा पोर्टल पर उपलब्ध होती है। इसी पोर्टल पर मनरेगा में दर्ज कोई भी श्रमिक नागरिक यह भी जांच सकता है कि शासकीय रिकार्ड के मुताबिक़ उसके मजदूरी भुगतान की क्या स्थिति है?

मनरेगा से संबंधित आंकड़ों के स्रोत -
https://nrega.nic.in/Nregahome/MGNREGA_new/Nrega_home.aspx

# समग्र / व्यापक स्तर पर आंकड़ों के स्रोत

## 22. सभी मंत्रालयों/विषयों की जानकारी (राज्यसभा और लोकसभा)

अगर हम भारत सरकार के सभी विभागों/मंत्रालयों (विशेष रूप से केंद्र सरकार के स्तर पर) द्वारा संचालित की जा रही योजनाओं, उनके द्वारा नियंत्रित नीतियों और अधिनियमों के क्रियान्वयन से संबंधित जानकारी हासिल करना चाहते हैं, तो इसके लिए भारत के संसदीय सदनों - राज्यसभा और लोकसभा की कार्यवाही को जानते-पढ़ते रहना चाहिए। इन सदनों में संसद सदस्य अलग-अलग मंत्रालयों से अपनी भूमिका के निर्वहन और सामाजिक-आर्थिक विषयों की निगरानी के उद्देश्य से हर सत्र में तारांकित और अतारांकित प्रश्न पूछते हैं। जिनके उत्तर संबंधित विभाग के मंत्रियों द्वारा दिए जाते हैं। राज्यसभा और लोकसभा का यह सन्दर्भ इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि सदनों में यथासंभव नवीनतम जानकारी उपलब्ध करवाई जाती है।

राज्य सभा के अलग-अलग सत्र होते हैं। इन अलग-अलग सत्रों में पूछे गए प्रश्नों और उत्तरों की जानकारी यहाँ उपलब्ध होती है - https://rajyasabha.nic.in/Questions/SessionWiseSearch

लोकसभा में पूछे गए प्रश्नों और उत्तरों की जानकारी यहाँ उपलब्ध होती है - https://loksabha.nic.in/Questions/Qtextsearch.aspx

अगर किसी ख़ास मंत्रालय से संबंधित जानकारी की आवश्यकता होती है, तो यह जानना महत्वपूर्ण होगा कि लोकसभा और राज्यसभा, दोनों ही सदनों में मंत्रालय के नाम के आधार पर भी जानकारी उपलब्ध करवाई जाती है।

लोकसभा में मंत्रालय के नाम से उपलब्ध जानकारी -
https://loksabha.nic.in/Questions/Qministrysearch.aspx

राज्यसभा में मंत्रालय के नाम से उपलब्ध जानकारी -
https://rajyasabha.nic.in/Questions/MinistryWiseSearch

## 23. शासकीय डाटा मंच (ओपन गवर्नमेंट प्लेटफार्म)

भारत सरकार ने विभिन्न विषयों, योजनाओं, क्षेत्रों और विभागों से संबंधित जानकारियों को एक मंच पर लाने के लिए ओपन गवर्नमेंट प्लेटफार्म तैयार किया है। इस मंच का इस्तेमाल करने के लिए यह स्पष्ट करना या स्वयं का इस बारे में स्पष्ट होना जरूरी है कि हम किस विषय से संबधित जानकारी चाहते हैं? और किस तरह की जानकारी चाहते हैं? इस मंच पर ट्रेवल और पर्यटन, युवा, स्वास्थ्य, शिक्षा, जल संसाधन समेत 4700 से अधिक शीर्षकों के अंतर्गत लगभग 6 लाख जानकारियाँ उपलब्ध हैं।

भारत के विभिन्न विभागों, राज्यों और विकास क्षेत्रों से संबधित आंकड़ों के स्रोत - https://data.gov.in/

## 24. भारत से सभी सर्वेक्षणों का लेखा जोखा

भारत में स्वच्छता की स्थिति, स्वास्थ्य पर व्यय की स्थिति, तम्बाकू के उपयोग की स्थिति, भू-धारिता और पशुपालन की स्थिति, भारत में नशीले पदार्थों के उपयोग/व्यसन की स्थिति, भारत में विकलांगता की स्थिति, भारत में सूचना तकनीक की स्थिति, भारत में समय का उपयोग सरीखे कई विषयों पर सर्वेक्षण होते रहे हैं. इन सभी को नीति आयोग से सम्बद्ध डेवलपमेंट एंड मानिटरिंग आफिस ने संकलित किया है।

भारत में होने वाले प्रमुख सर्वेक्षणों की सूची के स्रोत - https://dmeo.gov.in/sites/default/files/2021-09/Report_02092021_All_India_Surveys.pdf

# सतत विकास लक्ष्यों की स्थिति से संबंधित आंकड़े

## 25. सतत विकास लक्ष्य और उनका भारतीय सन्दर्भ

यह तो विदित है ही कि भारत में विकास का सीधा सम्बन्ध सतत विकास लक्ष्यों (सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल)से है। वर्ष 2030 तक 17 विभिन्न क्षेत्रों में 169 प्रगति सूचकों के आधार पर भारत की सामाजिक-आर्थिक-राजनीतिक स्थिति में बदलाव किया जाना है। यूँ तो सतत विकास लक्ष्यों का निर्धारण वैश्विक आधार पर हुआ है, लेकिन भारत के सन्दर्भ में इनके मायनों/अर्थों को पुनर्परिभाषित किया गया है। यह जानना जरूरी है कि वास्तव में जब इन लक्ष्यों का सन्दर्भ लिया जाता है, तब उनके वास्तविक मायने क्या हैं? लक्ष्यों को हासिल करने के लिए किस स्थिति को हासिल करना होगा?

भारतीय सन्दर्भ में सतत विकास लक्ष्यों और प्रगति सूचकों को परिभाषित करने वाले जानकारी के स्रोत - https://mospi.gov.in/documents/213904/0/NIF.pdf/c16a84f2-053d-49b0-9042-96be12cf8247?t=1619176001725

## 26. भारत में सतत विकास लक्ष्यों की स्थिति

भारत ने तय किया है कि सतत विकास लक्ष्यों को वर्ष 2030 तक हासिल करने के लिए प्रतिबद्ध प्रयास किये जाने होंगे। इस विषय पर की जा रही पहल की सतत निगरानी और समीक्षा करने की भी जरूरत होती है। यह भूमिका नीति आयोग निभाता है। भारत के विभिन्न राज्यों में सतत विकास लक्ष्यों पर क्या प्रगति हो रही है, यह रिपोर्ट नीति आयोग जारी करता है।

सतत विकास लक्ष्यों से संबंधित सूचकांक के आंकड़ों के स्रोत - https://www.niti.gov.in/reports-sdg

# कृषि और प्राकृतिक संसाधनों से संबंधित आंकड़े

## 27. भारत में कृषि, वन उपज और मछली पालन की स्थिति

कृषि और जंगलों से प्राप्त होने वाले संसाधनों के बिना भारत की सामाजिक आर्थिक व्यवस्था का कोई विश्लेषण नहीं किया जा सकता है। इसी विषय पर कृषि और वन उपज के उत्पादन और उपलब्धियों से संबंधित आंकड़ों का संकलन सांख्यिकी और कार्यक्रम क्रियान्वयन मंत्रालय द्वारा किया जाता है।

इसके नवीनतम रिपोर्ट का स्रोत -
https://mospi.gov.in/documents/213904/301563//Brochure%2020221664349218900.pdf/72447e5a-771b-3ed3-6ad2-26f69fc44c6e

## 28. भारत में पशुधन की स्थिति

भारत की सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था में पशुधन एक अहम् संसाधन है। यह आजीविका के साथ-साथ सांस्कृतिक व्यवस्था का भी महत्वपूर्ण अंग हैं। भारत सरकार का पशुपालन विभाग नियमित रूप से "पशुधन गणना - लाइवस्टाक सेन्सस" करवाता है। वर्ष 1919 से शुरू हुई इस प्रक्रिया में अब तक 20 मर्तबा पशुधन गणना हो चुकी है। सबसे ताज़ा आंकड़ों के रूप में वर्ष 2019 में हुई 20वीं गणना की रिपोर्ट उपलब्ध है। इससे भारत और अलग-अलग राज्यों में उन पशुओं की संख्या और प्रजाति की जानकारी उपलब्ध होती है, जिन्हें पाला जाता है। पशुपालन चूंकि खाद्य सुरक्षा, कृषि व्यवहार, व्यापार और वाणिज्य में अहम् भूमिका निभाता है, इसलिए इन आंकड़ों का बहुत महत्व है।

भारत में पशुधन की स्थिति से संबंधित आंकड़ों के स्रोत -
https://www.dahd.nic.in/sites/default/filess/Key%20Results%2BAnnexure%2018.10.2019.pdf

## 29. वनों और प्राकृतिक संसाधनों का खाता

संसाधनों भारत में वनों और प्राकृतिक संसाधनों से संबंधित लेखा भी भारत सरकार द्वारा संधारित किया जाता है। भारत में मछली से संबंधित संसाधन, वनों से संबंधित संसाधन, विभिन्न राज्यों में वनों की स्थिति, उपलब्ध लकड़ी की मात्रा और उसके मौद्रिक मूल्य की जानकारी भी नियमित रूप से रखी जाती है।

भारत में वनों और प्राकृतिक संसाधनों की मात्रा और मौद्रिक मूल्य से संबंधित आंकड़ों के स्रोत -
https://mospi.gov.in/web/mospi/reports-publications/-/reports/view/templateFive/30303?q=RPCAT

## 30. भारत में जंगलों की स्थिति

भारतीय वन सर्वेक्षण (फारेस्ट सर्वे आफ इंडिया), पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (भारत सरकार) भारत में जंगलों की स्थिति पर हर साल एक रिपोर्ट जारी करता है। इस रिपोर्ट में भारत में विभिन्न राज्यों में वनों की स्थिति, क्षेत्रफल, बदलाव, भारत में बाघों के संरक्षण का क्षेत्र, कार्बन भण्डार, बांसों की उपलब्धता और राज्यों में वन आवरण से संबंधित विस्तृत आंकड़े और जानकारी दर्ज होती है। इस रिपोर्ट को "भारत - वन स्थिति रिपोर्ट" कहा जाता है।

भारत में वनों की स्थिति से संबधित आंकड़ों के स्रोत - https://www.fsi.nic.in/forest-report-hindi-details-2021

## 31. ई-ग्राम स्वराज पोर्टल

विकेंद्रीकृत शासन व्यवस्था के अंतर्गत भारत में ग्राम पंचायतों को पंचायती राज मंत्रालय के माध्यम से आर्थिक संसाधन उपलब्ध करवाये जाते हैं। इसके साथ ही अन्य मंत्रालय/विभाग भी ग्राम पंचायतों के माध्यम से ही विकास कार्यों का क्रियान्वयन करते हैं। संवैधानिक व्यवस्था के अंतर्गत हर पांच वर्षों में विकेंद्रीकृत शासन व्यवस्था को आर्थिक संसाधन उपलब्ध करवाने की व्यवस्था का निर्धारण वित्त आयोग के माध्यम से किया जाता है।

ग्राम पंचायतों के कामों में पारदर्शिता लाने के उद्देश्य से पंचायती राज मंत्रालय द्वारा ई-ग्राम स्वराज पोर्टल का संचालन किया जाता है। इस पोर्टल पर भारत की सभी ग्राम पंचायतों की जानकारी उपलब्ध करवाई जा रही है।

ई-ग्राम स्वराज पोर्टल - https://egramswaraj.gov.in/welcome.do

अन्य विभागों/मंत्रालयों द्वारा ग्राम पंचायतों के माध्यम के किये जा रहे कार्यों का ब्यौरा - https://egramswaraj.gov.in/mprDashboard.do

# विकास से संबंधित आंकड़े

## 32. विकास के आंकड़ों का प्रस्तुतिकरण

भारत में विकास से संबंधित आंकड़ों को अलग-अलग तरीकों/रूपों में प्रस्तुत करने के प्रयास भी हो रहे हैं। वास्तव में आंकड़े महत्वपूर्ण होते हैं, लेकिन उनका प्रस्तुतिकरण बहुत कठिन और जटिल होता है। ऐसी स्थिति में सरल रूप में प्रस्तुत किये जाने से उनका उपयोग और प्रभाव बढ़ जाता है।

भारत में विकास से संबधित कुछ महत्वपूर्ण आयामों के आंकड़ों के सरल प्रस्तुतिकरण के स्रोत - https://www.devdatalab.org/#page-top

## 33. विकास से संबंधित पहलुओं के विश्लेषण

विकास के कई पहलू और आयाम होते हैं। हर पहलू और आयाम का एक-दूसरे से गहरा सम्बन्ध होता है। एक तरफ तो हम आंकड़ों और तथ्यों के उपयोग की बात करते हैं, लेकिन इसके साथ ही हमें उनके विश्लेषण से भी वाकिफ होना चाहिए। एक ही आंकड़े पर दो अलग-अलग नज़रिए हो सकते हैं। उन दोनों नज़रियों को जानना बहुत जरूरी है। इस सन्दर्भ में नीति आयोग अलग-अलग विषयों पर तथ्य और आंकड़ों के आधार पर अध्ययनपरक रिपोर्ट्स जारी करता है।

विकास नीति के विभिन्न पहलुओं पर विश्लेषणपरक रिपोर्ट्स के स्रोत - https://dmeo.gov.in/index.php/reports-working और https://dmeo.gov.in/evaluation/dmeo-evaluation-studies